International Journal of Information Movement Vol.5 Issue XI (March 2021)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 24-28

'हिन्दी का वैश्विक पर्यावरण'

डॉ॰ ऋषिपाल,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी–विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल (हरियाणा) – 136021
Email: rishipalsuman@gmail.com

भारत भूमि देवों की पुण्य स्थली है। भारत देश को संसार की संस्कृति का मूलाधार माना गया है। हम संसार के सबसे महान लोकतंत्र देश के नागरिक हैं। हम भारतवासियों ने अपने सुकृत्यों, जीवन मूल्यों, आदर्शों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के कारण विश्वगुरु के पद को भी सुशोभित करने का गौरव प्राप्त हुआ है। हम भारतीयों के लिए विडम्बना यह भी रही कि आपसी फूट, मूल्यों के पराभव, राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा आदि कारणों से लम्बे समय तक विदेशी शासकों के गुलाम भी रहे। दुःख इस बात का है कि लम्बे काल की परतंत्रता से हमने कोई सीख नहीं ली। हम भारतवासियों ने अपने अतीत के गौरव राम–राज्य के आदर्शों को भुला दिया। सामाजिक वैमनस्य के कारण विदेशी शासकों के जाल में फंसते चले गए। अनेक भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान से फलतः 15 अगस्त, 1947 को हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। फिर से देश में सत्ता स्वदेशियों के नेतृत्व में आयी। नये भारत के स्वप्न देखे जाने लगे। आजादी के बाद भारत देश में राष्ट्रपति बने, राष्ट्रगीत भी बना, राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय जानवर, राष्ट्रीय संविधान आदि बने। यह खुशी व सन्तोष देने की अनुभूति भी है। लेकिन दुःख इस बात का है कि जिस मातृभाषा हिन्दी में हमने स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी वह मातृभाषा आज तक राष्ट्र भाषा नहीं बनी। इसके लिए हारा स्वाभिमानी आग्रह, नेता, सरकार, प्रशासन, राजनीति व कई अन्य कारण बाधा बने, जिनके चलते आज तक विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र देश की कोई राष्ट्र भाषा नहीं है।

भारत देश को आजाद हुए लगभग 73 वर्ष से अधिक हो गये हैं। हमारे देश की आबादी लगभग 140 करोड़ तक पहुंचने वाली है। हमारे भारत देश की विडम्बना यह है कि संविधान में सहमति से राजभाषा के रूप में हिन्दी के स्वीकृत हो जाने के बाद भी हिन्दी को वह मान–सम्मान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारी है। हमारे देश में अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय, अलग–अलग भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं। ''भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसमें अनेकता में एकता और एकता में अनेकता दिखाई देती है। इसकी गौरवशाली परम्परा है। जैसे – यहां विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं, हर जाति की अपने वेशभूषा, अपने आचार–विचार और अपनी भाषायें हैं।''[1] भारत देश की विडम्बना यह है कि गलत अंग्रेजी बोलने वाले का सम्मान सही हिन्दी बोलने वाले से अधिक होता है। जबकि होना यह चाहिए कि सही अंग्रेजी बोलने वाले से ज्यादा सम्मान गलत हिन्दी बोलने वाले का हो। ''संसार में किसी भाग में भाषायी स्वाधीनता आन्दोलन इस प्रकार हुआ हो, जिस तरह भारत में हुआ। अंग्रेजी हटाओ, देशी भाषा को स्थान दो।''[2] ऐसा नहीं है कि आज हम निराशा में बातें कर रहे हैं। एक में शक्ति होती है। हमें संकल्प शक्ति से काम लेना होगा। हिन्दी राष्ट्र भाषा बने व संयुक्त राष्ट्र संघ की

भाषा भी बने इसके लिए हमें स्वाभिमानी आग्रह दिखाना होगा। प्रवासी साहित्य हमें प्रेरक शक्ति दे रहा हैं ''हिन्दी प्रवासी साहित्य हिन्दी के विराट संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, परिस्थिति और सृजन–प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिन्दी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिन्दी संसार में अपना योगदान दिया है।''[3] भाषिक दृष्टि से भारत बहुभाषी देश है। हमारे देश में 1500 से भी अधिक मातृभाषाएँ हैं। ''भारत कई भाषाओं से समृद्ध है। संविधान से स्वीकृत 22 भाषाएँ हैं, उनके अलावा कई उपभाषाएँ अपनी भाषायी स्वीकृति की परीक्षा में खड़ी हैं।''[4] सुखद अनुभूति इस बात की है कि समस्त बाधाओं के चलते हिन्दी देश में ही नही अपितु विदेश में भी अपनी पकड़ बना रही है। इसका श्रेय निश्चित ही प्रवासी साहित्यकारों को जायेगा। प्रवासी साहित्य पर लिखते हुए कमल किशोर गोयनका जी मत है कि, ''भारतेत्तर देशों में भारतवंशियों के हिन्दी साहित्य ने अपना एक भरा–पूरा संसार निर्मित किया है और उसके आकार, मात्रा व स्तर में निरन्तर वृद्धि हो रही है।''[5]

हिन्दी केवल भाषा ही नहीं है अपितु संस्कृति, संस्कार है, जिसकी चमक दुनिया के सभी देशों तक आलोकित है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि हिन्दी ने अपनी विशिष्टताओं के बलबूते संसार में अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। हिन्दी कम या ज्यादा आज विश्व में बोली, पढ़ी, समझी जाने लगी है। विश्व में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। इससे पूर्व हिन्दी का 145 से अधिक देशों में हिन्दी का प्रयोग होता है। लगभग 50 देशों में हिन्दी पढ़ी और पढ़ाई जाती है। दुनिया के लगभग 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का प्रशिक्षण दिया जाता है। वैश्विक बाजार का इसमें महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो भाषा अपने देश में वह गौरव प्राप्त नहीं कर सकी जिसकी वह अधिकारी है, वही भाषा दुनिया के देशों में अपनी पहचान गति से बनाती जा रही है। यह सुखद अनुभूति है। अपनी राष्ट्रभाषा के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। कई बार तो लगता है कि राष्ट्रीय चरित्र का ऐसा पतन हुआ कि सब कुछ स्वार्थ, राजनीति, भ्रष्टचार के सागर में डूब गया लगता है। भारत में राष्ट्रीय चेतना ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना मानो विलुप्त हो गयी है। अपनी राष्ट्र भाषा के बिना कोई भी राष्ट्र गूंगा होता है। हिन्दी के पुरोधा साहित्य सम्राट भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का यह उदात्त सन्देश हमें अपनी प्रतिबद्धता को याद कराता है –

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के शूल।''

किसी भी राष्ट्र के लिए भाषा एकता, अखण्डता तथा विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनेक महान कवियों जैसे सूर, तुलसी, कबीर, मीरा, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, निराला आदि ने धर्म के साथ–साथ भारतीय संस्कृति को भी अभिव्यक्ति दी है। हिन्दी ही विश्व की केवल एक मात्र ऐसी भाषा है जो वैज्ञानिक भाषा की कसौटी पर खरी उतरती है। इसमें हम जो बोलते हैं वही लिखते भी हैं। वर्तमान में दुनिया के प्रत्येक देश में हिन्दी सीखने वालों की वृद्धि हो रही है। भारत देश में व्यापार बढ़ाने की दृष्टि से अनिवासी भारतीय भी अपनी आने वाली पीढ़ियों को हिन्दी सिखाने लगे हैं। मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी सबसे अधिक लाभ की भाषा बन गई है।

आज हिन्दी को अगर हम वैश्विक नज़रों से निहारें तो विगत 20 वर्षों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार विदेशों में बहुत अधिक गति से हुआ है। व्यापार, वैब, संगीत, सिनेमा, विज्ञापन

आदि के क्षेत्र में हिन्दी ने अपने कदम बढ़ा दिए हैं। देखा जाए तो हिन्दी को विश्व में कोने–कोने तक पहुंचाने में हिन्दी सिनेमा व गीतों का योगदान बहुत अधिक रहा है। विदेशों में ही सिनेमा ने हिन्दी को लोकप्रिय ही नहीं बनाया बल्कि हिन्दीत्तर राज्यों में भी लोकप्रिय बनाया है। हिन्दी ने संसार को समृद्ध साहित्य दिया है। अनेक फिल्मकारों जैसे सत्यजीत रे, बासु चटर्जी, मणि कोल, विमल राय, केदार शर्मा आदि प्रसिद्ध फिल्मकारों ने अपनी–अपनी महत्ती भूमिका निभायी है। वर्तमान दौर में विदेशी और देशी भाषाओं की फिल्मों की हिन्दी डबिंग ने नया रोजगार पैदा किया है। 'मदर इण्डिया', 'लगान', 'पहेली' जैसी फिल्में आस्कर अवार्ड के लिए नामांकित हुई हैं। प्रो॰ चंद्रकात मिशाल के शब्दों में, ''सिनेमा हिन्दी भाषा, भारतीय सभ्यता और संस्कृति तीनों के ही वैश्विक प्रचार एवं प्रसार का वर्तमान में एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। क्योंकि भारतीय भाषाओं की अस्मिता की झलकियाँ हमें हिन्दी सिनेमा में मिलती हैं। अतः हिन्दी सिनेमा भारतीयता की अनूठी पहचान है। सिनेमा ने अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं विविधता को प्रदर्शित करने का असीम प्रयास किया है।''[6] हिन्दी के उपन्यासकार सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की कालजयी रचनाएँ जैसे – गोदान, कर्म भूमि, गबन, सेवा सदन, निर्मला आदि रचनाओं को भी फिल्मों ने आम जन तक पहुंचाने में अपना योगदान दिया है।

हिन्दी ने हमें अनेक कवि, लेखक, साहित्यकार, फिल्म निर्माता, गज़लकार, कहानीकार दिए हैं। हिन्दी के जिस वर्तमान स्वरूप का हम आज अपने नैतिक जीवन और साहित्य सृजन में कर रहे हैं, वह अपनी पूर्ववर्ती भाषाओं का लगातार बदलता व संवरता रूप ही है। ''पृथ्वी राज रासो', 'आल्हाखण्ड', 'श्रीरामचरितमानस', 'श्री कृष्णचरित', 'बिहारी सतसई', 'प्रिय प्रवास', 'कामायनी', 'साकेत' सदृश अनेक महान ग्रंथ हिन्दी ने दिये हैं जो समय की शिला पर अंकित हैं। विश्व की अन्य महान भाषाएँ हिन्दी का लोहा मान रही हैं। कबीर, दादू, नानक, जायसी, तुलसीदास, सूरदास, बिहारी, भूषण, भारतेन्दु, पंत, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, अज्ञेय, प्रेमचन्द आदि महान साहित्यकार हिन्दी ने दिये हैं। इतना ही नहीं कविता, गीत, प्रबन्ध–काव्य, मुक्तक–काव्य, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, एकांकी, लघु कथाएँ, समीक्षा, संस्मरण, यात्रा साहित्य, अनुवाद, सम्पादन, पत्रकारिता आदि के रूप में हिन्दी का असीम योगदान अविस्मरणीय है।''[7]

विगत दो दशकों में बाजारवाद ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अहं भूमिका निभाई है। बाजार का नियम है कि किसी भी वस्तु या भाषा का महत्त्व उसकी मांग या उपयोग पर निर्भर करता है। भारत देश दुनिया की सबसे बड़ी खरीददार और उपभोक्ताओं की मण्डी (बाजार) है। जहां खरीदने वाला होगा, बेचने वाला भी वहीं पहुंचेगा। बेचने के लिए आकर्षक प्रलोभन व विज्ञापनों की आवश्यकता पड़ती है। बाजार में माल खरीदना–बेचना बिना आपस की समझ के कैसे सम्भव हो सकता है? बात सीधे–सीधे समझ में आ जाती है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है, क्योंकि यहां की जनसंख्या भी दुनिया के प्रथम के एक दो देशों के बाद गिनी जाती है। इसलिए विदेशी व्यापारियों को हिन्दी सीखना, बोलना पढ़ना उनकी मजबूरी भी है और मांग भी है। हिन्दी की अपनी अनेक विशिष्टताओं, विलक्षण गुणों के कारण भी विश्व में लोकप्रियता बनी है। हिन्दी अपार प्रत्यय भण्डार के बल पर नई संज्ञा विशेषण अथवा क्रिया के लिए सही शब्द देने में सशक्त है। चीनी भाषा में यह विशेषता नहीं है। ''हिन्दी अपनी

समावेशी प्रवृति के कारण विस्तार के नए आयाम छू रही है, चाहे प्रिंट मीडिया हो या इंटरनेट के अन्य माध्यम हों। इसीलिए संचार माध्यम की भाषा न जनभाषा का रूप धारण करके व्यापक जन स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इस भाषा को विश्व की प्रथम सर्वाधिक व्यवहृत भाषा बनाने का श्रेय भूमण्डलीकरण और संचार माध्यमों के विस्तार को जाता है। तभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भी हिन्दी और भारतीय भाषाओं के सहारे भारत के बाजार में उतरना पड़ रहा है।''[8]

बाजारवादी संस्कृति के प्रभाव से वर्तमान दौर में सूचना प्रौद्योगिकी का भी प्रचलन अधिक हो रहा है। अनेक विशेषज्ञों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर और इंटरनेट के लिए उपयुक्त माना है। सुखद बात यह है कि संचार माध्यमों के कारण अनेक देशों में हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। मीडिया ने भी हिन्दी को विश्व पटल पर लाने में महत्ती भूमिका निभाई है। अनेकों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विज्ञापन ग्राहकों को लुभाने के लिए हिन्दी में दिये जाते हैं। हिन्दी ने अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर लिया है। वर्तमान दौर में भौगोलिक बन्धनों से विश्व मुक्त हो गया है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में दूरदर्शन की भूमिका भी कम नहीं है। रामायण, महाभारत, विश्वामित्र, भारत एक खोज, शांति, जय हनुमान आदि दूरदर्शन के लोकप्रिय धारावाहिकों को विदेशी नागरिकों ने पसन्द किया है। इतना ही नहीं दूरदर्शन पर हिन्दी के चैनलों में जैसे जी.टी.वी., सोनी टी.वी., जी सिनेमा, सहारा टी.वी., स्टार टी.वी. की लोकप्रियता ने भी योगदान दिया है। रेडियो ने भी इस दिशा में योगदान दिया है। हिन्दी गीतों को हम हिन्दी की लोकप्रियता के लिए कैसे भूल सकते हैं? हमारे धार्मिक प्रचारकों व धर्मगुरुओं का योगदान भी हिन्दी को विश्व के अनेक देशों में ले जाने के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

सारांशतः ''भारत की सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाने के लिए और अनेकता में एकता की भावना पैदा करने की क्षमता केवल हिन्दी में ही है।''[9] जल्दी ही हिन्दी राष्ट्र भाषा बने। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन जाए। इसके लिए भारतीय दूतावास भी स्वाभिमानी आग्रह दिखाएं। ''हिन्दी अधिकारिक रूप से विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।''[10] कल तक हिन्दी के प्रति हमारे मनों में जो निराशा थी, आज वह निराशा दूर होती जा रही है। हिन्दी वैश्विक जगत में सूर्य की तरह आलोकित एवं प्रकाशित हो रही है, जिसमें दोपहर के सूर्य की गर्मी व प्रकाश भरा पड़ा है। हम सभी ने वैयक्तिक रूप से, नैतिक रूप से, संवैधानिक रूप से हिन्दी को अपना बनाने का संकल्प लेना चाहिए। निश्चित ही हिन्दी के लिए भारतीय सांस्कृतिक दूत, सामाजिक संगठन, प्रवासी भारतीय, रचनाकार, फिल्मकार व बाजारवाद सभी का योगदान वन्दनीय, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। हिन्दी को राज से 'राष्ट्र भाषा' और 'राष्ट्र से 'अन्तर्राष्ट्रीय भाषा' के रूप में ले जाने के लिए उसके प्रति लगाव, समर्पण, ईमानदारी, निष्ठा व उत्साह उतना ही जरूरी है, जितना कि संवैधानिक प्रावधान।

संदर्भ

1. हिन्दी भाषा का महत्त्व, सं॰ डॉ॰ अनिता, पृ॰ 89
2. साहित्य अमृत (मासिक पत्रिका), सं॰ त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी सितम्बर, 2015, पृ॰ 23
3. प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे (प्र. सं॰ कमल किशोर गोयनका,), पृ॰ 17
4. साहित्य अमृत (मासिक पत्रिका, सं॰ त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, सितम्बर 2015), पृ॰ 23

5. प्रवासी जोहान्सबर्ग से आगे – सं॰ कमल किशोर गोयनका, पृ॰ 16
6. डॉ॰ चन्द्रकान्त मिशाल, ''हिन्दी की वैश्विक महत्ता, पृ॰ 104
7. डॉ॰ महेश दिवाकर, हिन्दी का वैश्विक पर्यावरण, पृ॰ 185
8. कृष्ण गोपाल मिश्र, स्मारिका, 10वाँ हिन्दी विश्व सम्मेन, पृ॰ 08
9. डॉ॰ पठान रहीम खान, भारतीय भाषाएँ व प्रवासी साहित्य, पृ॰ 273
10. डॉ॰ शैलेन्द्र कुमार शर्मा, हिन्दी की वैश्विक महत्ता, पृ॰ 123